मोहताज नहीं नाम की व्यथा

पृथ्वीनाथ मधुप

[redacted]

मोहताज नहीं नाम की व्यथा पृथ्वीनाथ मधुप की मर्मस्पर्शी 52 कविताओं का संग्रह है। कवि की इन कविताओं की पंक्तियों में जहाँ स्मृति की रेखायें रेखांकित हैं वहीं विछोह की असह्य व्यथा व्यक्ति के हृदय को व्यथित करती हैं। कवि की यह व्यथा नाम के लिये ही केवल मोहताज नहीं है अपितु अतीत के समस्त भावनाओं के भी मोहताज है। जैसा कि प्रो॰ सियाराम तिवारी का कथन है "पृथ्वीनाथ मधुप की कविताओं के साथ पाठक का पूरा संवाद होता है। कविता की सफलता की परख के लिए यदि कोई कसौटी हो सकती है तो यही कि उसमें कवि और भावक के हृदय-हृदय का सवांद हो। इस कसौटी पर मधुप जी की कविताएँ खरी उतरती हैं।"

वस्तुतः प्रस्तुत पुस्तक में कवि की प्रतिभा एक तरफ झलकती है तो दूसरी तरफ उसकी भावनायें। भाषा शैली की दृष्टि से ये कवितायें अत्यन्त सरल, सुबोध एवं हृदयग्राह्य हैं। यही कारण है कि एक कविता पढ़ने के बाद पूरी पुस्तक पढ़े बिना सहृदय का चित्त शान्त नहीं होता है।

ISBN 81-85970-43-2

शारदा पुस्तकालय
(संजीवनी श्री द. कं.)
क्रमांक 1208
462

मोहताज नहीं नाम की व्यथा

संजीवनी शारदा केन्द्र
के पुस्तकालय के लिये
सस्नेह भेंट!

31/08/02

पृथ्वीनाथ मधुप
84/C-3, ओम नगर, उदयवाला,
बोढ़ा, जम्मू-130002

पृथ्वीनाथ मधुप

परममित्र प्रकाशन

डी पॉकेट-214, दिलशाद गार्डेन
दिल्ली - 110095 (भारत)
2002

प्रकाशक :
परममित्र प्रकाशन
डी-पॉकेट, 214 दिलशाद गार्डेन, दिल्ली-110095
शाखा :
5818/6, न्यू चन्द्रावल, जवाहर नगर
दिल्ली-110007
टेलीफोन : (011) 3917538, 2295900
मोबाइल - 9868110178

सर्वाधिकार : पृथ्वीनाथ मधुप

प्रथम संस्करण - 2002
प्रथम आवृत्ति - 500 प्रतियाँ

मूल्य : 80

ISBN 81-85970-43-2

MOHTAJ NAHEE NAAM KEE VYATHA
(Poetry Collection)
By Prithvi Nath Madhup

Rs.80.....

समर्पण

श्रीमती शान्ता मधुप

(19[illegible] . 1999)

तुम्हारी स्मृति

को

समर्पित

प्रस्तुति

सफल कविता के लिए तीन बातें आवश्यक हैं : तीव्र अनुभूति, सरल अभिव्यक्ति और सहज सम्प्रेषणीयता। मधुप जी की कविताओं में ये तीनों गुण हैं। ये सभी कविताएँ अनुभूति से ही उत्पन्न हैं। आज के अधिकांश कवि जो कविताएँ लिख रहे हैं, उनका जन्म अनुभूति के स्तर पर नहीं, चिंतन और विचार के स्तर पर होता है। इसलिए उन कविताओं में विचारोत्तेजकता तो है, अनुभूतिप्रवणता नहीं है। वे कविताएँ मस्तिष्क का कुरेदती तो हैं, हृदय को रस-प्लावित नहीं करतीं। मधुप जी की ये कविताएँ मर्म को छूती हैं और सहृदय को उन अनुभूतियों का सहभागी बनाती हैं जिनसे वे कविताएँ जनमी हैं।

द्वितीय स्तर परं भी ये कविताएँ सफल हैं। अभिव्यक्ति के लिए कवि को कुछ साज-सामान नहीं जुटाना पड़ा है। उसे न तो काव्यात्मक शब्दों के अन्वेषण की आवश्यकता हुई है, न अलंकारों का आश्रय लेना पड़ा है और न वह उपचार-वक्रता के ही फेरे में पड़ा है। अपनी अनुभूतियों को उसने सही और सटीक शब्दों में सहज ढंग से व्यक्त कर दिया है। ये कविताएँ अभिव्यक्ति की भंगिमा से पाठक को चमत्कृत करने के बदले अपनी सहजता से आकृष्ट कर लेती हैं। इसी सहजता के कारण ये कविताएँ तृतीय स्तर पर भी सफल रही हैं। सहज अभिव्यक्ति के कारण इनमें सहज सम्प्रेषणीयता भी है। जिस सहजता के साथ कवि ने इन्हें अभिव्यक्त किया है, उसी सहजता के साथ पाठक इन्हें ग्रहण भी करता है।

निष्कर्ष यह है कि इन कविताओं में कवि के साथ पाठक का पूरा संवाद होता है। कविता की सफलता की परख के लिए यदि कोई कसौटी हो सकती है तो यही कि उसमें कवि और भावक के हृदय-हृदय का संवाद हो। इस कसौटी पर मधुप जी की कविताएँ खरी उतरती हैं।

प्रो॰ सियाराम तिवारी
पूर्व हिन्दी-विभागाध्यक्ष तथा
मानविकी एवं समाज विज्ञान संकायाध्यक्ष,
विश्वभारती, शांतिनिकेतन (पश्चिम बंगाल)

21-12-2001 ई॰

प्रथम पंक्ति क्रम

			पृष्ठ
1.	कलेजे में गड़ी	.....	7
2.	उस दिन	.....	8
3.	दो-दो शरीरों को अपने	.....	9
4.	लंऽबीऽऽ अंधी सुरंग	.....	11
5.	भौतिक काया	.....	13
6.	कोरा शब्दजाल	.....	15
7.	आहिस्ता उठा लेना चीजें	.....	17
8.	न मांजो ज़ोर से	.....	18
9.	सुनाता रहा	.....	19
10.	खिले गहरे रंग	.....	21
11.	दूर से चली आती है	.....	23
12.	वॉर्ड में घुसते ही	.....	24
13.	कान हो रहा	.....	25
14.	यही माँग रहा	.....	26
15.	जब भी दिया	.....	28
16.	मेज़ कुर्सियां बुक-रैक गालीचे	.....	30
17.	कई दिन पहनी साड़ी की तरह	.....	32
18.	दाढ़ों में अनिष्ठ के	.....	33
19.	कठिन बहुत है	.....	34
20.	चाही / महक नर्गिस की	.....	35
21.	चाँदनी नहाया	.....	36
22.	जैसे / फूलों-भरी अंजलि	.....	38
23.	फूलों के रंगों के	.....	39
24.	खिज़ाँ के मुल्क से	.....	40
25.	आया / आया क्षण	.....	41
26.	अभी / घेर लेता	.....	43
27.	भन्ना रहा सिर	.....	44
28.	नियत पर मेरी	.....	45
29.	बहुत ही मुंहफट हो गये	.....	46
30.	नहीं हो सच	.....	48
31.	खोजी डॉक्टरों ने	.....	49
32.	हार सब कुछ	.....	52

शब्द नहीं काया

33.	माँ भवानी!	.....	58
34.	सुन लो गुहार	.....	62
35.	हे राम!	.....	66
36.	साई राम जपिए	.....	70

कलेजे में गड़ी
ज़ंग लगी
कुन्द नोक की कील
टंग गई तस्वीर!

●●●

प्रथम पंक्ति क्रम

			पृष्ठ
1.	कलेजे में गड़ी	.....	7
2.	उस दिन	.....	8
3.	दो-दो शरीरों को अपने	.....	9
4.	लंऽबीऽऽ अंधी सुरंग	.....	11
5.	भौतिक काया	.....	13
6.	कोरा शब्दजाल	.....	15
7.	आहिस्ता उठा लेना चीजें	.....	17
8.	न मांजो ज़ोर से	.....	18
9.	सुनाता रहा	.....	19
10.	खिले गहरे रंग	.....	21
11.	दूर से चली आती है	.....	23
12.	वॉर्ड में घुसते ही	.....	24
13.	कान हो रहा	.....	25
14.	यही माँग रहा	.....	26
15.	जब भी दिया	.....	28
16.	मेज़ कुर्सियां बुक-रैक गालीचे	.....	30
17.	कई दिन पहनी साड़ी की तरह	.....	32
18.	दाढ़ों में अनिष्ठ के	.....	33
19.	कठिन बहुत है	.....	34
20.	चाही / महक नर्गिस की	.....	35
21.	चाँदनी नहाया	.....	36
22.	जैसे / फूलों-भरी अंजलि	.....	38
23.	फूलों के रंगों के	.....	39
24.	खिजाँ के मुल्क से	.....	40
25.	आया / आया क्षण	.....	41
26.	अभी / घेर लेता	.....	43
27.	भन्ना रहा सिर	.....	44
28.	नियत पर मेरी	.....	45
29.	बहुत ही मुंहफट हो गये	.....	46
30.	नहीं हो सच	.....	48
31.	खोजी डॉक्टरों ने	.....	49
32.	हार सब कुछ	.....	52

शब्द नहीं काया

33.	माँ भवानी!	.....	58
34.	सुन लो गुहार	.....	62
35.	हे राम!	.....	66
36.	साई राम जपिए	.....	70

कलेजे में गड़ी
ज़ंग लगी
कुन्द नोक की कील
टंग गई तस्वीर!

●●●

प्रथम पंक्ति क्रम

			पृष्ठ
1.	कलेजे में गड़ी	.....	7
2.	उस दिन	.....	8
3.	दो-दो शरीरों को अपने	.....	9
4.	लंऽबीऽऽ अंधी सुरंग	.....	11
5.	भौतिक काया	.....	13
6.	कोरा शब्दजाल	.....	15
7.	आहिस्ता उठा लेना चीजें	.....	17
8.	न मांजो ज़ोर से	.....	18
9.	सुनाता रहा	.....	19
10.	खिले गहरे रंग	.....	21
11.	दूर से चली आती है	.....	23
12.	वॉर्ड में घुसते ही	.....	24
13.	कान हो रहा	.....	25
14.	यही माँग रहा	.....	26
15.	जब भी दिया	.....	28
16.	मेज़ कुर्सियां बुक-रैक गालीचे	.....	30
17.	कई दिन पहनी साड़ी की तरह	.....	32
18.	दाढ़ों में अनिष्ठ के	.....	33
19.	कठिन बहुत है	.....	34
20.	चाही / महक नर्गिस की	.....	35
21.	चाँदनी नहाया	.....	36
22.	जैसे / फूलों-भरी अंजलि	.....	38
23.	फूलों के रंगों के	.....	39
24.	खिजाँ के मुल्क से	.....	40
25.	आया / आया क्षण	.....	41
26.	अभी / घेर लेता	.....	43
27.	भन्ना रहा सिर	.....	44
28.	नियत पर मेरी	.....	45
29.	बहुत ही मुंहफट हो गये	.....	46
30.	नहीं हो सच	.....	48
31.	खोजी डॉक्टरों ने	.....	49
32.	हार सब कुछ	.....	52

शब्द नहीं काया

33.	माँ भवानी!	.....	58
34.	सुन लो गुहार	.....	62
35.	हे राम!	.....	66
36.	साई राम जपिए	.....	70

कलेजे में गड़ी
ज़ंग लगी
कुन्द नोक की कील
टंग गई तस्वीर!

●●●

उस दिन
दोपहर दो बजे
जो सूरज डूबा
समूचा अन्धेरा
सीने में उतर गया !

रुक गई
घड़ी की सूइयाँ

उगल रहा आसमान –
अन्धेरा
उगा रही मिट्टी –
अन्धेरा
बह रहा –
झोकों में अन्धेरा
प्रवाह में अन्धेरा.....

उस दिन जो सूरज डूबा
दोपहर दो बजे
सीने में / मेरे
उतर गया
समूचा अन्धेरा!

(३)

दो-दो शरीरों को अपने
एक साथ देखना
कैसा लगा?

एक/बेहरक़त बिना श्वास का
दूसरा
वायु-वाष्प निर्मित-सा
चलता-फिरता
सब कुछ देखता
ठोस से -
गुज़रता ऐसे
शीशे से किरण जैसे

कैसी होती
हल्की काया?
हू-ब-हू हाड़-मांस की-सी?
या फर्क होता
आकार में
रंग-रूप में
सोच-समझ में
इसमें भी होती चेतना?
संस्कारों की वही दुनिया?

छत से तनिक नीचे
तिरता वाष्प-शरीर
जब देखता
नीचे बिस्तर पर पड़ी
अपनी भौतिक काया
उसे / कैसा लगता?

होती व्यथा
अथवा / अनुभव खुशी का?
फिर से आने को
इसमें
मन करता?

कितना सच
इच्छा करते
इच्छित ठौर पहुँचना?

क्या है?
कहाँ?
कैसी -
वह दुनिया?

वहाँ -
अपना कोई मिला?

क्या सुना?
क्या कहा?
उन्हें –
उदासी दी
या प्रसन्नता? .....

●●●

लंऽबीऽऽ अंधी सुरंग
स्याह काली
पड़ा होगा गुज़रना
इसमें से
तुम्हें भी!

डरी?

डर लगता था कितना
यहाँ
तिलचट्टों, चूहों छिपकलियों ..... से भी

विषय
डर
शरीर का केवल ?

वहाँ
हल्कापन
उन्मुक्तता और हर्ष
आनन्द अपार शान्ति का .....

महसूसा होगा
(यही तो
मेरी आँखों की नदियों में
बान्धतें हैं बाँध)

उजास
प्रकाश
असीम आलोक
आलोक की अनन्त असीमता

फिर
अलग अस्तित्व
कहाँ रहता

(५)

भौतिक काया
अग्नि को सौंपने के बाद भी
मण्ड़राती रही
हमारे गिर्द
तुम्हारी आत्मा :

अन्यों का
कह नहीं सकता
पर दावे से कह सकता
मण्ड़राती रही
हमारे गिर्द
तुम्हारी आत्मा :

साँस रहते
तुम्हारी हर क्षण की चिन्ता
प्यार
अनन्त सागर-सा उमड़ता

पड़े-पड़े भी
मृत्यु-शैय्या पर
आश्वासन तुम्हारा
'नहीं मरूंगी

परेशान न हों
ओह! - हाय! रहेगी
काया अभी
नहीं छोड़नी
कहते ज्योतिषी'

देखने आती
लाड़लियों को
नन्हे-मुन्नों को
जिन पर अपनी एक-एक साँस
बूंद-बूंद रक्त
अपना सब कुछ
वारती रही

माँगती रही
आँचल पसार
पत्थर के व हाड़-माँस के
भगवानों से
जिनके लिए
हरियाली
फूल रंग-रंग के
व तरह-तरह की खुशबुएँ

जब तक
भौतिक काया में रही
सारी चुभन
समूचे ज़ख़्म
अपने ही सीने पर
ढोती रही

अब
कैसे हो सकती
हमसे जुदा
यह लक्षण ही नहीं
तुम्हारे स्वभाव का

(६)

कोरा शब्दजाल
तुम्हारी सांत्वना

क्यों व्यथित हुए
वियोग से
मर्यादा पुरूषोत्तम?
क्यों सजल नेत्रों से
विलाप करते रहे?
जंगल-जंगल के
पेड़-पौधों से
पूछते क्यों रहे?

फिर भी आशा
पुनर्मिलन की ज़िन्दा थी
अन्तर्मन में / उनके

क्या प्रस्ताव रखा
कंस के आगे
देवकी की
प्राण-रक्षा के लिए
वसुदेव ने?

क्यों रखा?
तह तक पहुँचों
इनके
तथ्य आयेगा सामने

मैं न मर्यादा पुरुषोत्तम
न पिता योगेश्वर का

एक साधारण जन
रखते क्या अपेक्षा ?

(७)

आहिस्ता उठा लेना चीज़ें
बहुत ही सावधानी से
इन पर लिखे हैं निशान
अपनी उंगलियों के
उसने

इन्हें ही पढ़-पढ़ के
चलती ये साँसें
उठा के रखना
एहतियात से
इन्हें

●●●

(८)

न मांजो ज़ोर से
रगड़-रगड़ के
इन पर मौजूद हैं
मौजूद रहेंगे
अक्षर
उसके नाम के
खरोंच न लगे
तनिक भी तकलीफ में न रहें
संबल ये

●●●

सुनाता रहा
महाकाव्य बीसियों
रोम - रोम -
निस्पन्द काया का
मुन्दी आँखें /सपनों में खोई-सी
चढ़ता सूर्य -
धमकती लाल बिन्दी
उतरती संध्या - सी
सिन्दूर माँग का
चेहरा -
शान्त मुस्कान नहाया.....

सुनता रहा चुपचाप
गीली नज़रों की खामोशी में
बेख़बर
कि कितनी ही आँखों के घेरे
घेरे हैं

सुनता रहा गहराइयों की गहराइयों में डूब
नीरवता की
तब तक
जब तक

विराम झकझोर का
उस साकार संवेदन ने
लिख न दिया
नीरवता की गहराइयों पर

व्यस्त हैं कई
ताकि
समाधिस्थ-सी मुखर काया
कुछ क्षण और
महाकाव्य कई
सुनाती न रहे

चाहता रहा
तुम से सब सुना / सौंप दूँ
कागज़ के सीने को
पर
हर बार
अक्षर-अक्षर से
फूट पड़ती नदी
बह जाता हूँ
तेज़ धार में

●●●

खिले गहरे रंग
बदरंग हो गये
उगे सपने क्यारियों के
मुरझ पंखुरी-पंखुरी
बिखर गये -

अचानक!

कौन दिशा-कौन राह ली
सिर पर पाँव धर
हरी लहक
बिन लहके
कहाँ चली
बेआवज़

अचानक!

खुशबू संवरी शीतल हवा के
पाँव /लकवा गये
उमस व बरसाती बदबू हो गया
पूरा आसमान -

अचानक!

गूंगा हो गया
कार्निस की यात्री
गौरैया का गीत
प्रभाती केसरी किरण का
वह पहला परस भी
पथरा गया

अचानक!

सिकुड़ कर संसार
हो गया
दस बाई दस
मुश्किल में पैर पसारने की
भागने लगा अक्षर-अक्षर

अचानक!

दूर से चली आती है
वह आहट
मुड़ कर
घुसती है गली में
और भी साफ हो कर

अचानक रुक जाती है
आँगन के द्वार पर
रंध्र-रंध्र रोम-रोम
रोमांच दे कर

होने को मेरे
तब्दील कर
कानों में
न दस्तक देती है!
न ब्यल बजाती है!!

●●●

(१२)

वॉर्ड में घुसते ही
बैठी थी
मैंने देखा

नज़र पर
विश्वास की मुहर लगाना
दूबर हो गया

सामने आने पर
पहला काम
जो तुमने किया
वही पच्चीस-तीस साल पहले की
आश्वत करती
खुशबू सनी
मुस्कान फैंकी
मैं रोम-रोम
खुशी से नहा गया
सुन ली प्रभु ने मेरी
मुझे लगा

हाथ उठा
आगे किया
मिलाया
'सॉरी' कहा
मैंने नज़रों

व सिर की हल्की-सी जुम्बिश से
तुम्हारे सामने
प्रश्न धर दिया
'वही परसों का व्यवहार'
कहते पलकें झुकीं
भीगेपन के भार से
'क्षमा कीजिये
सुध न थी मुझे
मैं क्या बक गई
दीदी न कहती
क्षमा भी न ले पाती.....'
गला ऐसा अंवरुद्ध हुआ
कि आगे कुछ सुनाई न दिया

दुखी न हो
छिपी थी मुझ से
तुम्हारी दशा?
इस विचार को
अन्दर से तुरन्त निकाल बाहर करो
स्वस्थ होओ
बरबादी से बचा लो
मेरे अस्तित्व को
मुझे मेरा पहले जैसा 'मैं' लौटा दो

●●●

कान हो रहा
पूरा जिस्म आज :
वह आवाज़
पर्दों से टकरायेगी

मरुस्थल के सीने पर
लिख जायेगी-
गुलाबों की गंध
पूरा हरा समन्दर

स्याह रात के जूड़े में
टंक जायेगा चाँद
अरञ्जिमाल की टेर सुन
रूठा साजन आयेगा

धुल जायेगा दिलों से
खूनी जनून
पा जायेगा विस्थापन
अपनी मिट्टी का सकून

परिन्दों की पूरी संगत
चिनार की फुनगी पर
समवेत में गायेगी

तुम्हारी वह आवाज़
पर्दों से टकरायेगी

●●●

(शान्ता का टेप किया हुआ एक भजन सुनने से पहले की उत्सुकता, जो दिल में शिद्दत के साथ समाई थी, पर दुर्भाग्य! बच्चों ने उसे इरेज़ कर फिल्मी गाना भरा था!!!)

रहे सदा आँखों के आगे
यही माँगा था -
रहे सलामत
जब तक हूँ
यह दर्पण

रहे सदा दिपता
सामने क्षण-क्षण
यही माँग
यही विनय थी.....

आँधी आई
किस ओर
कहाँ से
तिपाई लुढ़की
चटक गया आईना
किरचें-किरचें
नीचे

माँग हो गई पूरी
मिला
विनय का फल
देखते-देखते

फल-दाता!
विनती सुनने वाले!
तुम हो क्या?

गर हो भी
नहीं कान तेरे
कह दूँ नेत्रहीन
तो क्या है मेरा दोष ?
कहो
क्या रहा
सामने आँखों के
कहो कहो!!

नहीं बोलते
गर हो
बेज़बान हो

आकाश-कुसुम!
कल्पना चतुर की!!
धोका ओ!!!

• • • •

जब भी दिया
कुछ नहीं दिया
सच के सिवा

ख़ामोश रातों में
जब भी आये
जो शब्द दिये
मेरे साथ सभी को
हैरानी दी /सच्चाई की

उस रात
जो आपने दिया
सब से पहले
उसके ही आगे रख दिया-
अक्षरशः
खिल उठा
कमल उसका मुर्झा
'मुझे मेरे पिता ने
बचाया'
उसके अन्दर की गहराई से तुरन्त फूटा

आश्वत हुआ
मेरे साथ वे भी

जिन्हें उसने
शैय्या पर पड़े-पड़े
बदल-बदल करवट
खुशी में बोर
आपके
शब्द दिये

पर पिता!
कुछ दिन बाद ही
वज्रपात हुआ?
मैं टूट गया
बिखर गया!
?.....?.....?.....

●●●

मेज़ कुर्सियाँ बुक-रैक गालीचे
सबने
अपनी-अपनी जगह ली
फिर से

हट गये
जाले /कोनों के

क्रम से
कम हो रहा
वेग
उनकी उफनती नदी का

पर /यह क्या
क्यों नहीं आता
सावधानी कोमलता
प्यार के सार का
वह हाथ
तरतीब देने
धूल झाड़ने
बेतरह बेतरतीब
किताबों की

क्यों नहीं उतार फैंकता
फटी मैली जिल्दें
नई चढ़ाने को

क्यों नहीं
चुपके से
धीरे से
उठा डायरी
निःशब्द
पृष्ठ पलट
टटकी पंक्तियों के
शब्द-शब्द के
इतर के
कहने में
खामोशी से गुज़र
चेहरे पर उभरी ज़बान को
खिची स्मित से
रेखांकित कर
कनखियों के शिल्प में सराहना उछाल
लबालब / भर जाती
ताज़गी से
उजास से
घुटे तमठुसे
कमरे को

●●●

कई दिन पहनी साड़ी की तरह
तुमने हर ख्वाहिश
उतार फैंकी

उतार दिया
इसके साथ ही
अपना आपा भी
मेरी इच्छा बस इच्छा
पहनी-ओढ़ी /हो गई

तुम तनिक भी
तुम न रही
मैं हो गई
बस मैं!

●●●

दाढ़ों में अनिष्ठ के
अस्तित्व छटपटाता

अचानक अनिष्ठ-निवारक यज्ञ
शुरु हुआ
किसकी चिन्ता
किसकी सूझ का फल?

पड़ी आहुतियों पर आहुतियाँ
शिखायें-
ऊँचाइयाँ नापने लगी
सुगन्ध ने-
एक संसार रच दिया
फैली गंधिल ऊष्मा.....

वेदी पर
एक डेरी भस्म की ..... अब

कौन आहुतियाँ ?
कौन अग्नि-शिखा??

●●●

कठिन बहुत है
प्यारा भारी भार
व अपनी लाश
कन्धों पर लादे
बिना लाठी
तनहाई के भरोसे
जमे अन्धेरों में
कैक्टस-जंगल से
राह निकालते गुज़रना!

गुज़रना है
गुज़रते रहना है
पर
बहुत कठिन है

चाही
महक नर्गिस की
रंग-विधान का प्रभाव
इसका
झूमते छन्द इसके
झकोरों के साथ

चाही
गुलाब की
पंखुरी-पंखुरी
समग्रता इन पर लिखी
नज़रों को निमन्त्रण
हर प्रभात
ओस लिखे गीत
इन पर के

चाही
ब्रह्मकमल की ऊँचाई
पुंज-पुंज पावनता
पुन्य
देव को अर्पित करने का .....

मिला
कई गुणा ज़्यादा
भाग्य सराहा

अचानक के
काले अन्धड़ में
कुछ भी
संभल न पाया

●●●

चाँदनी नहाया
विस्तार मन भाया
कुंकुंम कुसमों का

नाचती -
श्वेत शिखरों पर उजास
भोर किरणों की

गुदगुदाता
परस प्यारा
वासन्ती वायु का

विशाल चिनार का
घना साया

फूलदानों में सजी
कमरों की सीमा पार करती
महक
ताज़ा नर्गिसों की

घुंघरू-सी बजती
पंछियों की प्रभाती
सन्तूर पर छिड़ी
धुन /भजन की

मेरा भी था
एक घर
प्यारा सुन्दर

शब्द
बार-बार कानों से
टकरा रहे
न जाने -
कब किसके कहे -
'गृहिणी गृहं उच्यते'.....

●●●

जैसे -
फूलों-भरी अंजलि
दहकते अंगारों से
भर दी गई

जैसे -
आस्था की आँखों में
गर्म-सुर्ख सलाखें
चुभो दी गई

जैसे -
धरती पर क़दम रखते
वसन्त के नाम
आया /शरद् का पैग़ाम

जैसे -
किसी माँ के
इकलौते लाल को
उग्रवाद ने भून डाला

जैसे -
ऐन मौक़े पर
वरमाला के
मण्ड़प में बम्ब फटा.....

ऐसे -
हो रहे पल-छिन
तुम बिन!

●●●

फूलों के रंगों के
चिड़ियों के कलरव के
पत्तों के मरमर के
झरनों के तान के
झील के सीने पर
खेलती उर्मियों के
भोर में हिमशिखरों पर बिखरे
घुले केसर के .....
शब्द
अब /अपने अर्थ-दर-अर्थ/ नहीं खोलते
नहीं बोलते

●●●

खिज़ाँ के मुल्क से
जो चली हवा
ऊँचाई पै पियरा
टूट गिरा
जो था हरा

नीचे
बिखरा! बिखरा!! बिखरा!!!

मेरी ही कथा
मेरी दास्ताँ
मेरा किस्सा
पत्ता-पत्ता!

आया
आया क्षण
चिन्ता को दे
देशनिकाला
हाथ-हाथ में ले
पथ पर बढ़ने का
चलते - चलते
बाँह-बाँह में डाल
बड़े चाव से
उन शब्दों की गहराई में
डूब-डूब फिर से
डूब-डूब जाने का
उन शब्दों में
जिन में
परमानन्द की नीलकण्ठ की
पावनता है
अरञ्जिमाल का नेह
'नादिम' की भरी रवानी'
'बच्चन' की मधुशाला की भी
पूरी मस्ती
और 'अज्ञेय' का टटकापन
गाम्भीर्य लबालब.....

अक्षर-अक्षर
उजला-उजला
और महकता.....

यह क्या
चौराहे पर
सीने में
इक तूफान लिये
जड़-सा
खड़ा
निपट अकेला
मैं!

अभी -
घेर लेता
रोमांच प्रसन्नता का
पास तुम्हारे आ रहा

अभी -
स्मृति
स्मरण के वरक़ खोल
पढ़वाती
रेखांकित पंक्तियाँ -

झटक दिया उनका
हमें ज़िम्मा लेना पड़ा
जो काम
अब मुझे सम्पन्न करना
और न जाने कब तक
होके रह जाती
स्थगित
यात्रा

●●●

भन्ना रहा सिर
हृदय हो रहा फटने को
खौल रहा
अन्दर ही अन्दर /लावा

मार जाता काठ
होठों तक आते-आते
शब्दों को

कहीं
अन्दर के अन्दर के
अन्दर में
रहीम
ऊँचे
काफी ऊँचे स्वर में
सुना रहे -
'----------
----------।
सुनि अठलै हैं लोग सब
बांटि न लै हैं कोय।।'

भौतिक काया में तुम होतीं
यह हालत होती?

●●●

नियत पर मेरी
शक नहीं करना :
जी रहा हूँ
तुम्हारे बिना

जीवन
तुम्हारे बिना का
तुम्हारा ही दिया :
तुम्हारे नाजुक
अंकुरों का
ध्यान रखना
खाद-पानी देना
हवा-धूप की
बाड़ की व्यवस्था करना
कारण
साँसे ढोने का

जिन रास्तों पर
छोड़ी है
पग-छाप

उन्हीं की यात्राएँ वर
बढ़ते रहना निरन्तर.....

शक नहीं करना
मेरी नीयत पर
कि जी रहा हूँ
तुम्हारे बिना

बहुत ही मुंहफट हो गये
वॉर्डरोब में के
नये-पुराने कपड़े
तुम्हारे

खोलते ही दरवाज़ा
शुरू हो जाते
बिना रुके
बिना सोचे
यों शब्द चलाते
कि जिगर छलनी कर देते
गंगा-जमुना की
भीषण बाढ़ बन जाते

कभी-
पीछे ले जाते
कुछ साल
कभी-
बीते कल की सुनाते
और अब की
व्यथा
तन्हाई
व कमी
शिद्दत बनाते

प्रश्न पूछते
नमक छिड़कते
जख़्मों पे
'कैसे ये कपड़े लगते
मुझ पे?'
अब प्रश्न होगा
किसका?
'ये मुझ पर फबते?
ठीक है -
कलर कॉबिनेशन की दृष्टि से?.....
किसी और की परवाह
क्यों करूँ
ठीक हैं
जब आप कहते.....'

कभी -
साड़ियाँ, ब्लाउज, सलवार-कमीज़ें.....
दार्शनिक हो
सवाल दागतीं समवेत में
जब भी कुछ नया
पहनतीं वे
तब क्या खुश नहीं होते?
नहीं देखते

प्रशंसा की निगाहों से?

अब
गर नया पहना उनने
फिर व्यथा में क्यों डूबें?

मन करता
कह दूँ फटकारते
चिल्ला के
जब भी तुम्हें बदला
वह थी /तुम थे
आज तुम हो
वह कहाँ?

●●●

नहीं हो सच
सच नहीं हो

हो भी
तो सिर्फ काया के लिये

रे!
स्वयं ही सोच ले
सोच ले -
गहराई में जा के
अच्छी तरह से
बिगाड़ सकते क्या
शब्द नहीं काया

खोजी डॉक्टरों ने
क्लिनिकल मौत से
लौटे हुओं के
कितने ही बयान
क़लमबन्द किये

अभी शरीर छोड़ चुकी
आत्माओं को
शरीर त्याग चुकी आत्माएँ
अपनों की
लेने
या अगवानी को आई
त्यागे शरीर का-सा होता
आत्मा का चेहरा?

हवा या भाप का
चेहरा होता?
होता होगा
कैसा?

पहले की
बहुत पहले की
आत्माओं का -
देहान्तर नहीं हुआ?

नहीं हुआ
पर
'.....ध्रुवं जन्ममृतस्य च'
कब तक?
तत्क्षण
या कुछ समय लगता?
यह कुछ कितना?
कोई नियम?

देहत्याग के
तीन साल बाद
ज़्यादा से ज़्यादा
ख़याल श्रीराम शर्मा आचार्य का

उन्हें जन्म क्यों न मिला
जिन्हें कई
या कई-कई दशक
गुज़रे हो गये?

आत्मा की होती
दो प्रतिकृतियाँ?
एक को जन्म मिलता
एक रहती वहीं
सदा-सदा?
ऐसी सम्भावना?

शरीर पाँच तत्त्वों का
पाँच तत्त्वों में विलीन हो जाता
शेष क्या बचता?
मन, बुद्धि, अहंकार?
क्या अस्तित्व इनका
शरीर के बिना?
संमिश्रण इन्हीं का
आत्मा?

मन से सूक्ष्म बुद्धि
बुद्धि से भी सूक्ष्म अहंकार
आत्मा सूक्ष्मतम रूप (?)
इन्हीं का?.....

क़ब तक
तलाश में रहेंगे
सही जवाब के
सवाल ये?

●●●

(स्मृतिशेष बन्धु मोहन निराश को समर्पित)

हार /सब कुछ
ख़ामोश आँसुओं
गूंगी आहों संग
उदास धूप में दिसम्बर की
छत पर बैठा
तन्हाइयों को भिगोता
छज्जे को तकिया बनाये

अचानक
कौंधी एक आवाज़
नीचे
कुछ-कुछ पहचानी
पर लाग़र

उठने की कठिनाई में
चला /उतरा सीढ़ियाँ
देखा एक फ्यरन एक दाढ़ी
बस.....

हिमालय की किसी कन्दरा से उतरा
कोई योगी?
हुसैन का शिष्य
कोई चित्रकार?.....

बहुत मेहनत से
मिला आँखों को
चेहरा
उस दाढ़ी के पीछे का

निराश!!!.....
फिर बग़लगीरी
कसन ज़्यादा
और ज़्यादा और भी ज़्यादा.....!

याद है बन्धु
खास अन्दाज़ में अपने
सीने पर लगे
टटके रिस रहे घाव पर कितने ही
राहत के /मरहम के
फाहों पर फाहे लगाये.....

टूट पड़ा
बरसों का बाँध
बातों का
प्रवाह ने
वितस्ता किनारे
डलहसनयार के
तुम्हारे पुश्तैनी घर के
उस छोटे से कमरे में पटका

जहाँ तराशे थे
कितने ही सुन्दर सपने साथ-साथ
और जाने क्या-क्या.....

कम हुई तीन-चार दशक
या ज़्यादा / उम्र

बदलते रहे सन्दर्भ
जुड़ती गई बातें .....

कहा तुमने ———
छोटे थे जब बच्चे
एक जोड़ा कबूतर
पाला उनने
दाना-पानी देना
आसमान की ऊँचाइयों को छुआना
नियम बन गया उनका
बच्चों की खुशी-खातिर
कोई व्यवधान न बना

एक दिन देखा
एक कबूतर पड़ा
साँसों के बिना
साँसें लौटाने की कोशिश में
सहलाता /सहलाते जाता
काफी एहतियात से

चोंच से
दूसरा.....

लाया कपड़ा
भीगी आँखों लपेट
शव को
नदी किनारे दफनाया

सारा ध्यान बच्चों का
अब /बचे कबूतर पर था
वह था
कि न पिंजरे से बाहर आता
न दाना या पानी लेता
बस /बेहाल उदास

पर में सिर छिपाये
पड़ा रहता
बच्चे निकालते
ज़बरदस्ती चोंच खोल

एहतियात से
दाना या सिर्फ पानी डालते
वह न निगलता न सुड़कता

एकदम कै करता
कातर आँखों टुकुर-टुकुर देखता

कितनी कोशिश की
पर उसने पर न खोले

उदासी को सीने से लगाये
बिन पिये/ बिन खाये
कितने दिन चलता
दम तोड़ बैठा------

xx xx

बिना ध्यान का बुढ़ापा
सभी काम निपटा
रात की काली डसती खामोशी ओढ़

लेटा कई-कई ख़्यालों के समन्दरों में
गोते लगाता
बचा कबूतर क्यों न हुआ?

अर्थ -
सांसों को ढोते रहने का??
सीने में उठती हूक
चुभन दर्द की

आँखों के खामोश झरने
तड़प.....
दिखावा????
यह उदासी :
अपने सुखों को रोना.....?

बचा कबूतर भी न हो सका!
न हो सका!!!.....
क्या अर्थ
साँसों को ढोते रहने का

'है
सनकी लालची हृदयहीनों के ठुकराये
अबोधों को
छिना प्यार देना
सहारा होना.....'
तुम!
तुम ही तो हो
आश्चर्य
न सोया हूँ न जागा

●●●

* शब्द नहीं काया

*इस शीर्षक के अन्तर्गत श्रीमती शान्ता मधुप की चार कश्मीरी रचनाएँ सानुवाद दी जा रही हैं। ये रचनाएँ काश्मीरी काव्य-की अत्यन्त लोकप्रिय विधा 'लीला' विधा में रची गई हैं। इनसे कवयत्री की भगवान के प्रति आस्था-विश्वास-भक्ति, संवेदनशीलता एवं कवित्व शक्ति का सहज ही अन्दाज़ा लगाया जा सकता है।

- प्रकाशक

माजि भवानि कुन

शेरि लवुँहऽत्य कोसम बुं लागय चा़ऽर्य-चा़ऽर्य
माऽज्य लगुँयय लगुँयय पादन पाऽर्य।
वोन्य म्वो'कुँलावतमी ये'मि नरुँकुँनि नार्य
माऽज्य लगुँयय लगुँयय पादन पाऽर्य।।

बजि आशि चानि डेडि तल आयस
ज़ान दिथ पावुँनावतय म्यति पायस
मुचुँरावतम बन्द दरुँवाज़न ताऽर्य।
माऽज्य लगुँयय-लागुँयय पादन पाऽर्य।।

योर यिथ कूत क्रेछर चा़लुन प्योम
कऽन्ड्यज़ालाह मुँश्कुँ पोशि अम्बुँरन गोम
कमुँ-कमुँ बुथ्य हाऽव्यनम येम्य संसाऽर्य।
माऽज्य लगुँयय लगुँयय पादन पाऽर्य।।

यिमुँवुँय माज्य ब्यनि बोय लोग वनुँक्याह
तिमुँवुँय पऽत्य-पऽत्य कूँत्य खनिहम चाह
ज्यव वनि क्याह वऽनुँनय म्याऽन्य अऽश्य-टाऽर्य
माऽज्य लगुँयय लगुँयय पादन पाऽर्य।।

वऽजिनस विज़ि-विज़ि यऽम्य जंजालन
खारान तय वालान छुम बालन
चोन नाव स्वरुँनस कतिआयम वाऽर्य।
माऽज्य लगुँयय लगुँयय पादन पाऽर्य।।

माँ भवानी!

माँ! तुम्हारे शीश पर ओस भीगे कुसुम चुन-चुन कर चढ़ा दूँ।
नरकाग्नि की झुलसन से मुझे मुक्ति दे दो
तुम्हारे चरण-कमलों पर जीवन अपना वार दूँगी, माँ!

बड़ी उम्मीदें ले कर तुम्हारे दर पर आई हूँ।
सच्चा ज्ञान दे कर संसार की वास्तविकता से परिचित करा दो।
मेरे लिए अभी तक जो द्वार बन्द हैं उन्हें खोल दो।
तुम्हारे चरण-कमलों पर जीवन अपना वार दूँगी, माँ!

संसार में आ कर कितने दुख-दर्द सहने पड़े।
सुगन्धित फूलों के ढेर काँटों के जाल में परिणत हो गये।
कितने ही घृणित चेहरे दिखा दिये इस संसार ने
तुम्हारे चरण-कमलों पर जीवन अपना वार दूँगी, माँ!

माँ! जो भाई-बहन बने, मुँह बोले।
उन्होंने ही पीठ पीछे वार किये!
क्या कहेगी जीभ, मेरी भीगे पलकों की ज़बान सब कहे।
तुम्हारे चरण कमलों पर जीवन अपना वार दूँगी, माँ!

हर समय संसार के जंजालों ने बुरी तरह से घेर लिया।
जो पल-पल भयानक ऊँच-नीच का सामना करा रहा।
ऐसे में तुम्हारा पावन नाम लेने की बारी ही नहीं आ पाई।
तुम्हारे चरण-कमलों पर जीवन अपना वार दूँगी, माँ!

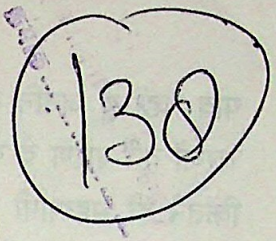

चरुॅनन चान्यय माञ्ज्य प्यियिसय परन
यिमुॅनुॅय तल माता दितुॅ म्य शरण
चानि दयायि बञ्ड्य-बञ्ड्य पाञपी ताञ्र्य।
माञ्ज्य लगुॅयय लगुॅयय पादन पाञ्र्य।।

अनुग्रेहुॅची म्ये कुन ति नजुॅराह कर
हर पॉफ साञरी म्याञन्य माञजी हर
थव कन नादन तुॅ बोज़तम विलुॅ-ज़ाञ्र्य।
माञ्ज्य लगुॅयय लगुॅयय पादन पाञ्र्य।।

गटि वञजिमुॅच़ छस गटुॅज्वो'ल कासतम
हनि-हनि मंज़ माञजी चुंय बासतम
पनुॅनुय रूफ हावतम म्य च़्वो'वापार्य।
माञ्ज्य लगुॅयय लगुॅयय पादन पाञ्र्य।।

प्रथविज़ पानसकुन कल थवतस
'शान्तस' चाव पनुॅने लोलुक मस
बस मंगान यी छय अथुॅ दाञ्र्य-दाञ्र्य।
माञ्ज्य लगुॅयय लगुॅयय पादन पाञ्र्य।।

●●●

पांव पड़ी हूँ जननि तुम्हारे।
चरणों की शरण दे दे।
कितने ही महापापी तुम्हारी अनुकम्पा से पार लगे।
तुम्हारे चरण-कमलों पर जीवन अपना वार दूँगी माँ!

मुझ पर भी अपने अनुग्रह की नज़र डालो।
माता! सारे पाप मेरे हर लो
गुहार सुन लो, करुणा भरी पुकार पर ध्यान दो।
तुम्हारे चरण-कमलों पर जीवन अपना वार दूँगी माँ!

घेरा है तम ने, मेरा अन्धकार दूर करो
कण-कण में तुम ही भासमान होओ
अपना सुन्दरतम रूप चहुँ ओर से दिखा लो
तुम्हारे चरण कमलों पर जीवन अपना वार दूँगी माँ!

हर वक़्त तुम्हारे दरस की ही तड़प हो
निज प्रेम की हाला 'शान्ता' को पिला दो।
बस यही आँचल पसार माँग रही तुम से।
तुम्हारे चरण-कमलों पर जीवन अपना वार दूँगी माँ!

नाद बोज़

मनि चाऽन्य पाद म्य ह्यती
नाद बोज़ माऽज्य भवाऽनी!
कर अनुग्रह, दूर कर
पाफ-शाफ-द्वख म्याऽनी।

वो'नुॅमुत छुय ना चे़
यस नुॅ काहं तऽम्यसुॅन्ज़ बुॅय
क्याज़ि मऽशिराऽवथस बुॅय
वादुॅ याद कर पनोनुय।
वो'थ दयादि हुन्द खज़ानुॅ त्राव
बेकस छस मंगाऽनी
मनि चाऽन्य पाद म्य ह्यती
नाद बोज़ माऽज्य भवाऽनी।।

वनुॅ कस मनुॅकुय हाल
चे़ रो'स्त कुस छुय म्योन।
बब तुॅ माऽज्य चुय आसुॅवुन्य
चुय म्योन कऽबीलुॅक्रोन।
त्राव कृपायिहुॅन्ज़ नज़र अख
म्यें, छ्य बस आश चाऽनी।
मनि चाऽन्य पाद म्य ह्यती
नाद बोज़ माऽज्य भवाऽनी।

रंगुॅ-रंगुॅ टंगुॅ अऽनिहस
खुरिवुॅय संसारुॅ क्यव
वुह्य-वाह्य वो'श त्राऽव्य-त्राऽव्य
गाऽमुॅच़ म्य अडुॅकऽज्य ज़्यव

सुन लो गुहार

हृदय में धारण कर लिए पादपद्म तुम्हारे
माँ भवानी! मेरी गुहार सुन ले
मुझ पर अनुग्रह कर
मेरे समस्त पाप, शाप तथा दुखों को दूर कर।

तुम्हारे ही वचन हैं ये-
मैं हूँ उसकी जिसका कोई नहीं
क्यों भुलाया माँ! मुझे फिर
पालन करो वचन का
दया के भण्डार खोल दो
मैं असहाय हूँ आँचल पसारे माँ
मेरी गुहार सुन ले।

मैं अपनी व्यथा-कथा किसे सुनाऊँ
कौन है अपना तुम्हारे सिवा
तुम ही मेरी माता-पिता सभी संबन्धी
मुझ पर एक बार दया दृष्टि डालो
बस तुम्हारी ही आशा है मुझे
माँ मेरी गुहार सुन ले।

तरह-तरह से उलझाया
संसार की उलझनों ने
थक गई अब-
आहें भरते आँसू बहाते

हरदुँ ज़ुँन्यार कासतम
सोन्थ थावतम फ्वो'लाऽनी।
मनिचाऽन्य पादम्य ह्यती
नाद बोज़ माऽज्य भवाऽनी।।

गरि-गरि नाव पनुँनुय
न्यति नेमुँ सुमुँराव तम
द्वरगथ कास द्वरुँगा
दरुँशुन म्यति हावतम।
गटुँज़्वो'ल दूर कर तम
गाशिच्य दि पाऽर्यज़ाऽनी।
मनि चाऽन्य पादम्य ह्यती
नाद बोज़ माऽज्य भवाऽनी।।

डेडि तल आमुँच़ गदा
'शान्तुन' ति बोज़ वोन्य सदा
पूरुँ कर अऽमिसुँन्द मुदा
छख चुँ द्वखुहर शारिका
ओ'श च़ालि-च़ालि हारान
वीलुँज़ार छय वनाऽनी
मनि चाऽन्य पादम्य ह्यती
नाद बोज़ माऽज्य भवाऽनी।।

खिलता वसन्त कर दे
शरद् के यौवन को मिटा मेरे
माँ! मेरी गुहार सुन ले।

पल-पल पावन नाम अपना
नियम से स्मरण करा लो
दुर्गतिनाशिनी दुर्गा
अपने दर्शन का सौभाग्य दो
समस्त तमस हर
परिचित करा लो उजाले से
माँ! मेरी गुहार सुन ले।

मैं भिखारिन द्वार आई हूँ तुम्हारे
'शान्ता' की पुकार भी सुन ले
मुराद पूरी कर ले-
दुखहारिणी शारिका हे!
आठ-आठ आँसू रो रही हूँ
विलाप कर रही हूँ तेरे आगे
माँ मेरी गुहार सुन ले।

रामो!

संकटुॅ मंज़ुॅ कडतम /संकटुॅहरुॅ रामो!,
दूर करतम हर ग़म /बोज़ आऽरच़र रामो!

पापुॅनारन हा म्याऽन्य तन
ताऽवनम दऽज़ुॅम हन-हन
त्रेशिदादि वुठ फेशन
छलुॅछांगुॅरि गव मन
दरशनुॅ शेहल्यम बदन
यितुॅ सनम्वो'ख रामो!

अथुॅ छ्यन्य तुॅ कुनिज़नि सफर
वथ ज़ीठ ह्यथ क्रेछर
छवो'टुॅनुक नुॅ कुनि कांह तर
रंगुॅ रंगुॅ वो'थमुत मच़र
कर नेरुॅनम वोन्य शर
सीतावरुॅ रामो!

च़ालुॅ किथुॅ यऽच़ गो'ब बार
करुॅ'क्याह रोवुम क़रार
किथुॅ लगि यथ नावि तार
कुनि अन्दुॅ छुस नुॅ व्यसतार
यीतनय वो'न्य म्योन आर
करुणाकरुॅ रामो!

हे राम!

संकट से उभारिये /संकट हरने वाले श्रीराम!
हर ग़म दूर करिये /आर्तनाद सुनिये श्रीराम!

शरीर झुलसाया मेरा पाप की आग ने
जला रोम-रोम मेरा
तड़प रही हूँ प्यासी
छटपटा रहा है मन
अपने दरस का शीतल जल प्रदान कीजिये
सन्मुख हो जाइये श्रीराम!

खाली हाथ सफर में अकेली हूँ
रास्ता लम्बा व जटिल है
दूरी कम नहीं होने की
सोच-सोच पगला गई हूँ
कब होंगे पूर्ण मनोरथ
हे सीतावर श्रीराम!

इतना भारी भार उठाये रखूँ कैसे
चैन खो गया, क्या करूँ
कैसे पार लगेगी नौका
कोई सूरत नज़र नहीं आती
तरस खाइये अब मुझ पर-
हे करुणासागर श्रीराम!

वदिना मा छुस राह
न्यप्वोतुँर छय 'शान्ता'
पतुँ छंब तुँ बुथिछुस चाह

योर-तोर क्युत छुस क्या
अरुँसरुँ लग्यमुँत्य आह
अछ़तस परुँ रामो!

रो पड़ूँ गर क्या दोष मेरा
पुत्रहीन हूँ मैं 'शान्ता'
पीछे पहाड़ आगे खाई है मेरे
क्या है, पास इहलोक-परलोक के लिये
क्या करूँ सिवा बग़लें झांकने के
मेरे दोनों लोक आप ही सुधारिये श्रीराम!

साई राम पर

पज़ि लोलुॅ साई राम साई राम पर
द्वख तुॅ दाऽद्य कासी परुॅतीश्वर।
पान पनुन बाबा-च़रुॅनन पुशर
द्वख तुॅ दाऽद्य कासी परुॅतीश्वर।।

सत्य नारायण छुय सर्वीश
भखुत्यन दूर करान साऽरी कलीश
यिहोय छु राम, राज्ञा, शंकर।
पज़ि लोलुॅ साई राम साई राम पर।।

श्वो'द मनुॅ यऽम्य ह्योत अकिफिरि नाव
तऽमिसुॅन्दि गरि सोर संकट द्राव
बाबा छु बडुॅ दयालू तुॅ कष्टुॅहर।
पज़ि लोलुॅ साई राम साई राम पर।।

युस बजि यॅछ़ि-पऽछ़ि पुशिर्येस पान
तस रछि प्रथ गटि सारिवुॅय सान
ज़ान दियस ज्ञानुॅच मुचॅरिथ बर।
पज़ि लोलुॅ साई राम साई राम पर।।

साई राम जपिये

साई भावनाभावित हो साई राम साई राम जपिये
पर्तीश्वर सभी रोग-शोक दूर करेंगे
सौंप दो स्वयं को बाबा-चरणों को
पर्तीश्वर सभी रोग-शोक दूर करेंगे।

सत्यनारायण सबके हैं, सबके ईश हैं
भक्तों के सभी क्लेशों को दूर करते हैं
बाबा राम, राज्ञाभवानी एवं शिव स्वरूप हैं
साई भावनाभावित हो साई राम साई राम जपिये।

शुद्ध मन से जिसने एक बार साई का नाम लिया
उसका, उसके समूचे परिवार का संकट दूर हुआ
बाबा अत्यन्त दयालु एवं कष्टनिवारक हैं
साई भावनाभावित हो साई राम साई राम जपिये।

आत्म समर्पण करता है जो श्रद्धा-विश्वास से
बाबा उसकी परिजनों सहित रक्षा करते
ज्ञान दे सच्चा मुक्ति का द्वार खोलते
साई भावनाभावित हो साई राम साई राम जपिये।

साई छु कलि य्योगुॅकुय अवुॅतार
वीदन हुन्द सार पानुॅ ओमकार
साई ध्यान धर साई सुमर
पज़ि लोलुॅ साई राम साई राम पर।।

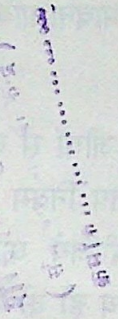

सारिनुॅय सूॅतिन वरताव प्रेम
सुय गव ज़फ तफ सुय गव नेम
प्रेमुॅय वव लोन बानन बर।
पज़ि़ लालुॅ साई राम साई राम पर

युस शीरुॅडी सुय छु पुटुॅपर्ती
सुय यियि प्रेमरूपुॅ प्रेमुॅ साई
'शान्तस' ति दियि सुय प्रेमुक वर।
पज़ि़ लोलुॅ साई राम साई राम पर

इस कलियुग के औतार हैं साई
वेदों का सार स्वयं ओमकार हैं साई
नित्य ध्यान धर स्मर साई साई
साई भावनाभावित हो जप लो साई साई।

सभी जीवों से करिये प्यार का व्यवहार
जप तप नियम का है यही आधार
प्रेम बीजिये, काटिये भण्ड़ार भरिये
साईमय हो के साई राम जपिये।

जो शीरड़ी में वही तो पुट्टपर्ती
वहीं प्रेम-रूप में आयेंगे प्रेम साई
वही वर प्रेम का 'शान्ता' को देगें
'साई राम' साईमय होके जपिये।

138

1. पृथ्वीनाथ मधुप का जन्म 19-4-1934 को श्रीनगर (कश्मीर) में माता श्रीमती लीलावती तथा पिता कश्मीरी रामायण के रचयिता एवं सन्त कवि, पण्डित नीलकण्ठ शर्मा के घर हुआ।

2. आपने बी॰ए॰ जम्मू-कश्मीर विश्वविद्यालय से, एम॰ए॰ (हिन्दी भाषा एवं साहित्य) पंजाब विश्वविद्यालय (चण्ड़ीगढ़) से तथा बी॰एड॰ जम्मू विश्वविद्यालय से किया।

3. सन् 1958 में ये श्रीमती पोशकुजी तथा पण्ड़ित श्यामसुन्दर हण्डू (तहसीलदार) की सुपुत्री श्री शान्ता मधुप के साथ परिणय सूत्र में बन्धे।

4. आपको कविता विरासत के रूप में मिली है। अभी तक आपकी पाँच कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। ये हैं -:

(क) वे मुखरक्षण
(ख) खोया चेहरा
(ग) खुली आँख की दास्तान
(जम्मू-कश्मीर कला, संस्कृति व भाषा अकादमी से पुरस्कृत)
(घ) बबूल के साये में मोगरा, तथा
(ङ) बहुचर्चित एवं बहुप्रशंसित खण्ड काव्य रुकी नदी।

गद्यक्षेत्र में आपकी उल्लेखनीय कृतियाँ हैं:-

(क) कश्मीरियत : संस्कृति के ताने-बाने (जम्मू-कश्मीर कला, संस्कृति व भाषा अकादमी तथा केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा पुरस्कृत)
(ख) कश्मीर की लोक-कथाएँ
संकलित रचनाएँ

6. आपने कश्मीरी काव्य के शीर्षस्थ भक्त कवि परमानन्द की अनेक कविताओं का संकलन करके इन्हें हिन्दी में कवि-श्री माला : परमानन्द के नाम से तथा कश्मीरी लोक-गीतों का पद्यमय अनुवाद वाणीवितस्ता की नाम से किया है। इसके अतिरिक्त समय-समय पर अनेक गद्य-पद्य कश्मीरी रचनाओं का हिन्दी अनुवाद किया है और कर रहे हैं।

7. सम्पादन, पत्रकारिता तथा हिन्दी प्रचार आदि क्षेत्रों में भी आपका उल्लेखनीय योगदान है। सम्प्रति केन्द्रीय विद्यालय संगठन से सेवा निवृत्त होकर विस्थापन की व्यथा सहते हुए साहित्यसेवा में संलग्न है।

आपका सम्पर्क सूत्र :- 84/सी-3, ओमनगर, उदयवाला,
जम्मू-180002, तथा दूरभाष 555168 है।